वर्ष :: 33 अंक : 12
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: रविवार, 18 दिसंबर, 2022 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मैनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

वेदांता-इलेट्रोस्टील प्लांट

लापरवाही का कारखाना

सुरक्षा में चूक ने फिर ली एक मजदूर की जान, शुरू से ही विवादों में घिरी रही है कंपनी

संवाददाता

बोकारो : सैकड़ों एकड़ वनभूमि पर अवैध कब्जा, रैयतों के विद्रोह आदि से लेकर मजदूरहितों की अनदेखी तक के मामले में शुरू से ही विवादों में घिरा रहा वेदांता इलेक्ट्रोस्टील प्लांट इन दिनों एक बार फिर सुर्खियों में है। वजह है प्रबंधन की कथित लापरवाही। नेता से लेकर मजदूर तक और कर्मचारी से लेकर अधिकारी तक ने कारखाना में श्रमिकों की सुरक्षा में लापरवाही और चूक की बात कही है। हाल ही में प्लांट में विस्फोट और चार मजदूरों के गंभीर रूप से झुलसने की घटना ने यहां लापरवाही की कलई खोल दी है। जिले के चंदनकियारी प्रखंड अंतर्गत सियालजोरी स्थित वेदांता ग्रुप के इलेक्ट्रो स्टील प्लांट में गुरुवार सुबह एमआरएसएस डिपार्टमेंट में ट्रांसफार्मर में विस्फोट हुआ, जिसमें चार मजदूर झुलस गए और इनमें से एक की इलाज के दौरान कोलकाता में मौत हो गई। वहीं हादसे में गंभीर रूप से जख्मी ठेका कंपनी के इंजीनियर पार्थ प्रीतम मांझी (26) की मौत हो गई और मौत के 24 घंटे बाद भी सियालजोरी थाना में मुकदमा दर्ज नहीं किया जा सका था। बताया जाता है कि जिस युवक की मौत हुई है, वह इंजीनियर था। घटना के बाद घायलों की स्थिति नाजुक देखते हुए उन्हें बीजीएच से कोलकाता रेफर किया गया था। बता दें कि एलबी इंजीनियरिंग नामक ठेका कम्पनी के मजदूर प्लांट के एमआरएसएस सबस्टेशन के वेक्यूम सर्किट ब्रेकर में शटडाउन लेकर मेंटेनेंस का काम कर रहे थे। इसी दौरान जोरदार फ्लैश हुआ और विस्फोट के साथ आग लग गई। उस वक्त वहां एलबी इंजीनियरिंग टीम के दर्जनों कर्मचारी काम कर रहे थे। ट्रांसफार्मर में विस्फोट होने से चार मजदूर जख्मी हो गए, जिसमें एक मजदूर गंभीर रूप से झुलस गया। घटना के बाद ईएसएल के फायर डिपार्टमेंट की टीम मौके पर पहुंच कर स्थिति को नियंत्रण में किया। घायल मजदूरों के नाम पार्थ प्रीतम मांझी (26), अनिल वान मालती (19), साहेब भुइयां (23) और पलाश पाल (28) के नाम शामिल हैं। पार्थ प्रीतम की मौत हो गई, जबकि पलाश पाल की स्थिति भी गंभीर बनी हुई थी। सभी घायल मजदूर बंगाल के रहने वाले हैं। बता दें कि चीनी तकनीक पर बने इस प्लांट में इसके पहले भी विस्फोट की घटनाएं हो चुकी हैं, लेकिन जिम्मेदारों के खिलाफ आजतक

डीसी ने बनाई जांच समिति, सीओ बोले- सुरक्षा में कमी, कराएंगे जांच

जिले के उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने मामले को गंभीर बताते हुए घटना के कारणों की गहन जांच के लिए एक जांच समिति का गठन कराया है। चास एसडीओ दिलीप प्रताप सिंह शेखावत की अध्यक्षता वाली चार सदस्यीय इस जांच समिति में श्रम अधीक्षक, कारखाना निरीक्षक और जिला आपदा प्रबंधन पदाधिकारी शामिल हैं। समिति प्रबंधन द्वारा कारखाना अधिनियम के अनुपालन की भी जांच करेगी। बता दें कि डीसी के निर्देश पर घटना के दिन चास अंचलाधिकारी (सीओ) दिलीप कुमार ने मामले की जानकारी के लिए बोकारो जेनरल अस्पताल पहुंचे। उन्होंने मीडियाकर्मियों से बातचीत में कहा कि सुरक्षा को लेकर चूक हुई है, जिसके कारण इतनी बड़ी घटना हुई है। उन्होंने कहा कि इस घटना को लेकर प्रशासन संजीदा है और वरीय पदाधिकारी के आदेश पर जांच की जा रही है। घटना से जुड़े हर तथ्य की जांच की जाएगी। जिले के फैक्ट्री इंस्पेक्टर धीरेंद्र सिंह मुंडा ने भी जांच किए जाने की बात कही। डीसी कुलदीप चौधरी ने कहा कि वेदांता इलेक्ट्रोस्टील प्लांट में हादसे की जांच को लेकर टीम गठित कर दी गई है। घटना कैसे हुई, इसकी जांच की जा रही है। घायल मजदूरों का बेहतर इलाज हो, इसे लेकर चास एसडीओ और जिला आपदा प्रबंधन पदाधिकारी अपनी नजर बनाए हुए हैं। मजदूरों के इलाज में किसी भी तरह की कोताही न हो, इस पर ध्यान रखा जा रहा है।

इधर, नेताओं ने भी खोला मोर्चा, पूर्व मंत्रियों सहित कई ने बताई लापरवाही

मजदूरों का किया जाता है शोषण : लालचंद महतो

वेदांता इलेक्ट्रोस्टील में विस्फोट और मजदूरों के झुलसने की घटना के खिलाफ पूर्व मंत्रियों से लेकर अन्य कई नेताओं ने अपना मोर्चा खोल दिया है। बीजीएच मजदूरों को देखने पहुंचे पूर्व मंत्री उमाकांत रजक ने कहा कि कंपनी की लापरवाही के कारण मजदूर हादसे का शिकार हो गए। पूर्व ऊर्जा मंत्री लालचंद महतो ने कहा कि इलेक्ट्रो स्टील प्रबंधन नियमों को ताक पर रखकर प्लांट का संचालन कर रहा है। वहां मजदूरों पर शोषण भी किया जाता है। एक प्रेसवार्ता में उन्होंने कहा कि वहां के मजदूरों से मिलने पर उनलोगों ने बताया कि कंपनी की ओर से नाश्ता व खाना के लिए भी समय नहीं दिया जाता है। कंपनी की ओर से कहा जाता है कि पहले आठ घंटे काम करो। उसके बाद खाना खाने के लिए जाना। इस प्रकार से मजदूरों का शोषण किया जा रहा है। प्लांट प्रबंधन की ओर से जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण फैलाया जा रहा है। कंपनी की ओर से सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का भी पालन नहीं किया जा रहा है। इसके बावजूद सभी राजनीतिक दल चुप व शांत हैं।

रैयतों को मुआवजा दिए बिना हड़प ली 427 एकड़ जमीन

पूर्व मंत्री लालचंद महतो ने कहा कि कहीं भी फैक्ट्री के अंदर गांव नहीं है, लेकिन इलेक्ट्रो स्टील प्लांट के बीच में गांव हैं। उन गांवों के लोगों को परमिशन से प्लांट गेट से बाहर जाना-आना पड़ता है। आज तक बिना मुआवजा दिए ही रैयतों की 427 एकड़ जमीन का अधिग्रहण कर लिया गया है।

बीस सूत्री टीम को प्लांट के अंदर जाने से रोका, घटना का साक्ष्य मिटाने का आरोप

वेदांता-इलेक्ट्रोस्टील प्लांट में हुए हादसे के दूसरे दिन घटना का जायजा लेने से प्लांट के सुरक्षाकर्मियों ने जिला बीस सूत्री समिति की टीम को रोक दिया। घटनास्थल जा रहे जिला एवं प्रखंड बीस सूत्री टीम में शामिल समिति के उपाध्यक्ष देवाशीष मंडल व अन्य नेताओं को सुरक्षा गार्डों ने अंदर जाने से मुख्य गेट पर ही रोक दिया। सुरक्षा गार्डों ने अधिकारियों से बगैर परमिशन अंदर नहीं जाने देने की बात कही। इस पर टीम का नेतृत्व कर रहे जिला बीस सूत्री उपाध्यक्ष मंडल ने जिले के उपायुक्त व आईआर से वार्ता होने की बात गार्ड से कही, परंतु वे नहीं माने। कोई सकारात्मक पहल नहीं हुई और टीम बैरंग लौट गई। लौटने के बाद टीम ने प्रबंधन की गलत नीतियों के खिलाफ जोरदार आंदोलन की घोषणा की।मंडल ने कहा कि प्रबंधन हुए हादसे से संबंधित साक्ष्य को मिटाने का प्रयास कर रही है। इसके लिए ही अंदर नहीं जाने दिया गया। प्रबंधन पावर प्लांट जैसी साइट पर अप्रशिक्षित लोगों द्वारा कार्य करवा रहा था, जिसके कारण घटना घटी। यह निंदनीय है। प्रबंधन सुरक्षा संबंधी मानकों का पालन नहीं कर रहा है। बैरंग लौटने वाली टीम में जिला बीस सूत्री सदस्य अजीत सिंह चौधरी, चास प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष महावीर सिंह चौधरी, जलेश्वर दास, बिरंची माहथा, समाजसेवी रामपद दास, तुलसी महतो, तपन दुबे, संतोष चौबे, राजू महतो, बाबुल दुबे, इस्लाम अंसारी आदि शामिल रहे।

सरकार के नियमों का नहीं हो रहा पालन : मंटू

झारखंड मुक्ति मोर्चा केंद्रीय सदस्य मंटू यादव ने घटना पर अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि वेदांता-इलेक्ट्रोस्टील में गुरुवार को हुए हादसे में घायल चारों मजदूर बाहर के हैं। इससे यह साबित हो रहा है कि कंपनी झारखंड सरकार के नियमों का पालन नहीं कर रही है। इस घटना में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पूर्व में भी जब भी घटना होती है। इलेक्ट्रो स्टील के द्वारा यह कहा जाता है कि मजदूर एक दिन पहले ही आए थे या फिर काम नहीं कर रहे थे, उनका काम नहीं था। जबकि श्रम कानून के तहत प्रिंसिपल एम्प्लॉयर की पूरी जवाबदेही है। झारखंड मुक्ति मोर्चा मांग करता है कि तत्काल चारों कर्मचारियों का समुचित इलाज कराया जाए। उनके परिवार को दस लाख रुपए मुआवजा तथा उनके परिवार के एक सदस्य को वेदांता इलेक्ट्रो स्टील में स्थाई नियोजन दिया जाए। झारखंड मुक्ति मोर्चा यह भी मांग करती है कि जिला प्रशासन स्थानीय उद्योगों में नियोजन में 75% की सीमा को तत्काल इलेक्ट्रो स्टील वेदांता में लागू करे और वहां के रैयतों और बोकारो के बेरोजगारों को रखने के लिए कंपनी प्रबंधन को विवश किया जाए।

न कंपनी संजीदा, न अफसर गंभीर... होते रहे हैं हादसे

वेदांता इलेक्ट्रो स्टील प्लांट में होने वाले हादसे को लेकर जिला प्रशासन के अधिकारी कभी गंभीर नहीं रहे हैं। इस वजह से आए दिन घटनाएं होती है, लेकिन मरने वालों के परिजनों को सही हक नहीं मिलता है। वेदांता इलेक्ट्रो स्टील प्लांट में एमआरएसएस के वैक्यूम सर्किट ब्रेकर में हुए ब्लास्ट को तीन दिन बीत गए, लेकिन जिला प्रशासन की ओर से गठित जांच टीम ने न तो प्लांट का दौरा किया था और न ही घटना के स्पष्ट कारण सामने आए थे। उल्लेखनीय है कि इस घटना से पहले 28 सितंबर 2021 को भी वेदांता इलेक्ट्रो स्टील प्लांट के अंदर खराब लिफ्ट से गिरकर रांची के रहने वाले तीन मजदूरों की मौत हो गई थी। उनकी मौत के बाद कंपनी प्रबंधन दो दिनों तक मृतकों के परिजनों के साथ वार्ता करता रहा। उसके बाद 6-6 लाख मुआवजा देने के बाद मामला ठंडे बस्ते डाल दिया।

संवेदनहीनता... अस्पताल में नहीं दिखा कंपनी का कोई भी नुमाइंदा

चार-चार मजदूरों के झुलसने की घटना के बावजूद बोकारो जेनरल अस्पताल में वेदांता इलेक्ट्रो स्टील प्लांट का कोई भी अधिकारी नजर नहीं आया। बता दें कि ब्लास्ट इतना जोरदार था कि प्लांट अंदर के साथ आस-पास के गांवों तक आवाज पहुंच गई। जोरदार आग की लपटें ब्रेकर के पास उठने लगी, जिसे तत्काल बुझाने का प्रयास किया गया। गंभीर रूप से झुलसे चार मजदूरों को वहां से तुरंत बीजीएच की बर्न यूनिट में भर्ती कराया गया। बीजीएच में उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए घायलों को कोलकाता रेफर किया गया। वहां पर एनपी इंजीनियरिंग के कर्मी परेशान जरूर दिखे, लेकिन वे कुछ भी बोलने से बचते रहे। न तो हादसे का कारण बता रहे थे और न ही गंभीर रूप से घायलों के परिजनों को जानकारी दी। आरोप है कि प्लांट के अंदर जिस इलेक्ट्रिक एमआरएसएस के वैक्यूम सर्किट ब्रेकर को मरम्मत करने का काम कोलकाता की एनपी इंजीनियरिंग कर रही है, वह अकुशल मजदूरों से करवाया जा रहा है।

– संपादकीय –

संवेदनहीन सरकार!

बिहार में सुशासन की सरकार होने का दावा करने वाले राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सत्ता-सुख की लालच में इतने संवेदनहीन हो जाएंगे, यह किसी ने शायद सोचा भी नहीं होगा। बिहार में शराबबंदी के सफल होने का ढ़िंढ़ोरा पीटने वाले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने हाल की घटनाओं पर अपना तर्क देते हुए पुनः यही दुहराया है कि जो शराब पियेगा, वह मरेगा। उन्होंने जहरीली शराब पीने की वजह से हुई मौंतों को लेकर बिहार विधानसभा में विरोध-प्रदर्शन कर रहे विपक्षी विधायकों पर भड़कते हुए मृतकों के परिजनों को किसी तरह का मुआवजा देने से इनकार कर दिया। जबकि, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी यह जानते है कि बिहार में महिलाओं के वोट बटोरने के चक्कर में ही उन्होंने जो शराबबंदी लागू की थी, वह पूरी तरह से विफल साबित हो चुकी है। आश्चर्य की बात तो यह है कि इससे पहले बिहार में भाजपा के साथ मिलकर जब नीतीश कुमार अपनी सरकार चला रहे थे और उस समय जहरीली शराब पीने के कारण जब भी इस तरह के हादसे होते थे तो नीतीश को 'पलटू चाचा' के नाम से संबोधित करने वाले राज्य के वर्तमान उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव खुलकर शराबबंदी कानून की खिलाफत करते थे, लेकिन आज वे भी मुख्यमंत्री के सुर में सुर मिला रहे हैं। जबकि, विपक्ष के साथ-साथ महागठबंधन में शामिल दलों के नेता भी शराबबंदी को विफल बताते हुए सरकार की इस नीति की आलोचना कर रहे हैं। दरअसल, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने खुद को नरेन्द्र मोदी जैसा मुख्यमंत्री घोषित करने के लिए गुजरात की तर्ज पर वर्ष 2016 में बिहार में भी शराबबंदी कानून लागू की थी। इसके पीछे उन्होंने घरेलू हिंसा पर रोक लगने का तर्क दिया था। जबकि, सच्चाई यही है कि शराबबंदी कानून लागू होने से लोग शराब पीना बंद नहीं कर देते। यही वजह है कि देश के अधिकतर राज्यों में शराबबंदी नहीं है। वर्तमान में बड़े राज्यों में सिर्फ गुजरात और बिहार में शराबबंदी लागू है। लेकिन, अगर बिहार की बात करें तो शराबबंदी लागू होने के बाद राज्य में शराब की तस्करी का धंधा तेजी से फलने-फूलने लगा और यह आज एक अघोषित उद्योग साबित हो रहा है। राज्य के गांव-गांव में शराब की बिक्री होती है। लोग इसे तीन से चार गुना ज्यादा कीमतें देकर खरीदते हैं और यह गारंटी भी नहीं होती कि वह शराब नकली है या असली। पड़ोसी राज्यों से शराब की तस्करी का कारोबार धड़ल्ले से जारी है। शराबबंदी के कारण ही जहरीली शराब पीने से होने वाली मौतों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। राज्य सरकार के खजाने को सालाना हजारों करोड़ रुपये का नुकसान अलग उठाना पड़ रहा है। राज्य में पर्यटन उद्योग पर भी इसका विपरीत प्रभाव पड़ा है। लेकिन, संवेदनहीन सरकार की सेहत पर इसका कोई असर नहीं पड़ता दिखता। क्योंकि, जानकारों की मानें तो शराब के अवैध कारोबार में सत्ता से जुड़े राजनीतिक दलों के लोग ही शामिल हैं। इसके साथ ही पुलिस को भी इस गोरखधंधे पर रोक लगाने में कोई दिलचस्पी नहीं है, क्योंकि उसे भरपूर कमाई होती है। राज्य में अवैध शराब के कारोबार में शामिल लोग करोड़पति बन चुके हैं। ऐसे में बेहतर यही होगा कि शराबबंदी की बजाय राज्य में शराब से जुड़े अपराधों को नियंत्रित करने के लिए कोई सख्त और प्रभावी कानून बनाया जाय।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

सेना की सतर्कता सराहनीय

दुश्मन देश चीन की हरकतें एक बार फिर जगजाहिर हैं। दोनों देश की सीमाओं पर अक्सर झड़प होती रहती है। हाल में अरुणाचल प्रदेश में तवांग सीमा पर जिस प्रकार चीनी सेना ने एक बार फिर घुसपैठ की हिमाकत की और जिस कदर हमारी भारतीय सेना ने सतर्कता का कुशल परिचय देते हुए उन्हें खदेड़ भगाया, यह वास्तव में सराहनीय है। भारतीय सेना ने अद्भुत शौर्य और पराक्रम दिखाते हुए कई बार चीनी सेना को खदेड़ चुकी है। ये उदाहरण यह बताने के लिए काफी हैं कि अब भारतीय सेना 1962 या 1971 वाली सेना नहीं रही। काफी बदलाव हो चुका है और हम काफी सशक्त हो चुके हैं। हालांकि, इस दौरान हमारी सेना ने अपने वीर जवानों के बलिदान भी दिए हैं, जिस पर पूरे देश को गर्व है। अब तेजी से बदलते जियो-पॉलिटिक्स के बीच वक्त की मांग है कि चीन की चुनौती से निपटने के लिए हम व्यापक रणनीति बनाएं, ताकि 1962 का शर्मनाक इतिहास खुद को दोहरा नहीं पाए। बता दें कि स्वतंत्र भारत में भारत और चीन के बीच एक बार ही युद्ध साल 1962 में हुआ था। तब एक माह तक चले युद्ध के दौरान चीन ने भारत की काफी जमीन हड़प ली थी, जिसे वापस पाने के लिए पीओके की तरह ही संसदीय प्रतिबद्धता दिखाने की जरूरत है। इस बात में दो राय नहीं कि सामरिक महत्वकी दृष्टि से सीओके यानी चीन ऑक्यूपाइड कश्मीर का अपना महत्व है।

इतिहास गवाह है कि 1967 में सिक्किम बॉर्डर पर नाथू ला में दोनों देश के सैनिक आपस में भिड़ गए थे, जिसमें दोनों पक्षों के कई सैनिकों की जान चली गई थी। हालांकि, वास्तविक संख्या के बारे में दोनों देश अलग-अलग दावे करते आये हैं। वहीं, 1975 में अरुणाचल प्रदेश में चीनी सेना ने भारतीय सेना के गश्ती दल पर हमला किया था, जिसके बाद भारतीय सेना ने भी जवाबी कार्रवाई की थी। वहीं, 2020 में 15-16 जून की मध्य रात्रि के दौरान लद्दाख के गलवान में चीनी सेना ने भारतीय सेना पर हमला किया था, जिस हिंसक झड़प में भारत के एक कमांडर समेत 20 जवान शहीद हो गए, जबकि चीन के लगभग 42 सैनिकों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी। वहीं, अगस्त 2020 मेंभारत ने चीन पर एक सप्ताह में दो बार सीमा पर तनाव भड़काने का आरोप लगाया था, जिसे चीन ने नकार दिया था। सितंबर 2020 में ही चीन ने भारत पर अपने सैनिकों पर गोलियां चलाने का आरोप लगाया था। फिर भारत ने भी चीन पर ऐसा ही आरोप मढ़ा था। वहीं, 20 जनवरी 2021 को उत्तरी सिक्किम के नाथू ला में भारत-चीन के सैनिकों के बीच हुई झड़प में कुछ सैनिकों के घायल होने की खबर आई थी, जिसके बाद स्थानीय कमांडरों द्वारा स्थापित प्रोटोकॉल के अनुसार मामला हल किया गया था। वहीं, 9 दिसम्बर 2022 को तवांग, अरुणाचल प्रदेश में भारत और चीन के सैनिकों के बीच झड़प हुई, जिसमें दोनों पक्षों के सैनिक घायल हुए। इन हालात से स्पष्ट है कि भारत और चीन के बीच कभी भी कुछ भी हो सकता है, जिससे निपटने के लिए भारतीय सेना हमेशा सतर्क रहती है। बता दें कि भारत के लद्दाख की 1,597 किलोमीटर, हिमाचल प्रदेश की 200 किलोमीटर, उत्तराखंड की 345 किलोमीटर, सिक्किम की 220 किलोमीटर और अरुणाचल प्रदेश की 1,126 किलोमीटर सीमा चीन से सटती है, जिसे केएलएसी कहा जाता है। वैसे तो ब्रिटिशकाल में ही मैकमोहन लाइन द्वारा भारत-चीन की सीमा को स्पष्ट कर दिया गया था, लेकिन चीन अब उसे मानने से इनकार करता है। यही वजह है कि दोनों देशों के सैनिक परस्पर लड़ते-भिड़ते रहते हैं। भारत और चीन के बीच एलएसी तीन क्षेत्रों में बंटी हुई है। पहला पूर्वी क्षेत्र जो अरुणाचल प्रदेश से सिक्किम तक फैला हुआ है। दूसरा मध्य क्षेत्र जो उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश की सीमाओं में फैला हुआ है और तीसरा पश्चिमी क्षेत्र जो लद्दाख की सीमा से जुड़ा हुआ है। इन क्षेत्रों में वक्त-वक्त पर पैदा हुए विवादों के मद्देनजर दोनों देशों के बीच कई बार सैन्य स्तर की बातचीत हो चुकी है, लेकिन तनाव अब भी जारी है। कहना न होगा कि इस मामले में चीन का राजनीतिक नेतृत्व भी समझदारी नहीं दिखा पा रहा है, क्योंकि उसकी तो मूल मान्यता ही रही है कि सत्ता बंदूक की नली से निकलती है। इसलिए शायद वह इसी बंदूक की नली से अपनी सीमाओं का विस्तार करने को भी लालायित है। रक्षा मामलों के जानकार बताते हैं कि ऊंची चोटियों पर काबिज होकर भारत की नकेल कसते रहने की गरज से चीनी सेना गाहे-बगाहे बखेड़ा खड़ी करती रहती है, जिसका माकूल जवाब अब मोदी सरकार में मिल रहा है। भारत ने अपनी सीमाओं पर त्वरित कार्रवाई के लिए सेना के माउंटेनस्ट्राइक कोर के छोटे युद्धक समूह तैनात कर रखे हैं। इन समूहों में इंफेंट्री, आर्टलरी तथा आर्मब्रिगेड की यूनिटों को मिलाया गया है। इनके हाई अलर्ट पर रहने के कारण ही चीन की चालबाजी विफल साबित हो रही है। भारत का माउंटेनस्ट्राइक कोर तो अब हमेशा तैयार रहता है जो अधिक ऊंचाई वाले इलाकों में युद्ध करने में दक्षता हासिल किए हुए है। वहीं, आईटीबीपी के जवान भी सीमाओं पर हर वक्त मुस्तैदी बरत रहे हैं।

एलएसी पर भारत-तिब्बत सीमा पुलिस यानी आईटीबीपी के 173 बॉर्डर आउट पोस्ट यानी बीओपी हैं, जिनमें पश्चिमी क्षेत्र (लद्दाख) में 35,मध्य क्षेत्र (उत्तराखंड-हिमाचल प्रदेश) में71और पूर्वी क्षेत्र (अरुणाचल प्रदेश-सिक्किम)के 67 बीओपी शामिल हैं। बता दें कि चीन का नया सीमा कानून लागू होने के बाद से ही भारतीय सेना सतर्क है और मौका मिलते ही जवाबी कार्रवाई करने से नहीं हिचक रही है, क्योंकि मोदी सरकार ने उसे पूरी एहतियाती छूट दे रखी है। देखा जाए तो चीन की तरफ से एलएसी के निकट सैन्य ढांचा खड़ा किये जाने और सैनिकों की तैनाती में लगातार इजाफा किये जाने और लगभग 600 से अधिक गांव बसा लेने से भारतीय सेना भी सतर्क है और उसी के अनुरूप जवाबी तैयारी भी कर रही है। चीन से मुकाबले के लिए भारत भी अपनी सीमा में सड़कों का जाल बिछा रहा है। गत पांच वर्षों में वह 2,088 किलोमीटर सड़कें बना चुका है। कुल मिलाकर भारत अब काफी सशक्त और एक तरफ सेना की यह सतर्कता आगे भी बनाए रखने की जरूरत है, वहीं सरकार के स्तर से भी अब ठोस रणनीति की जरूरत है, ताकि रोज-रोज के इस झंझट का निर्णायक परिणाम निकल सके।

– प्रस्तुति : गंगेश

मैथिली काव्यकृति

सहिआरल छै हूर

सुधीर कुमार झा, कोलकाता

हड़ासंख एहि चीन सन,
अधम ने कोनो आन।
कोनो पड़ोसी देश ने
बांचल,
सभ कें कएने हरान।
सभ कें कएने हरान,
भूमि हड़पय मे लागल।
पड़लै मारि तवांग मे,
सोझे घर भागल।

फेरि उमहि क' आओत,
अधम अछि आदति सं
मजबूर।
हुसत ने भारत देतन्हि
हुरेठि,
सहिआरल छै हूर।।

गामक अड़िछंट्टा किसान
सन,
छकड़य सभतरि आड़ि।
शांति के दुश्मन बनल
विश्व मे,
जोतने रहय अरारि।
जोतने रहय अरारि,
ने भगितो देरी होइ छै।
चोर ने सहय इजोत,
ठीके कहबी छै।
कतेक काल धरि चलतै
काज,
गीदड़-भभकी सं।
युद्ध ने ल'ड़ल जाइक,
अस्त्र-शस्त्र नकली सं।।

भोंकने छूरा पीठ भाई
कहि,
कएने अछि अपमान।
पहिलुक भारत आब ने
रहलै,

राखए पड़तै ध्यान।
राखए पड़तै ध्यान,
टूटि रहलैए आब गुमान।
सकल विश्व मे बढ़ि
रहलैए,
भारत कें सम्मान।
भारत सत्य, अहिंसाक
पूजक,
करए सभक सम्मान।
नाथि देत उन्मत्त हाथी
कें,
आहत जौं स्वाभिमान।।

दिन और रात के तापमान में तीन गुने का अंतर, 6 डिग्री तक लुढ़का पारा

सर्द का सितम... अब दिन में भी सिहरन और कनकनी, राज्य में न्यूनतम तापमान 7 डिग्री तक पहुंचा

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : बोकारो सहित पूरे राज्य में सर्दी ने अब अपना सितम दिखाना शुरू कर दिया है। बीते एक हफ्ते में ही मौसम में अप्रत्याशित बदलाव देखा गया है। हालांकि, इसका पूवार्नुमान पहले ही लगाया जा रहा था और ऐसा हुआ भी। बोकारो में दिन और रात के तापमान में तीन गुने का अंतर हो चुका है। शनिवार को दिन में अधिकतम तापमान जहां 24 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, वहीं रात का सबसे कम तापमान 8 डिग्री रहा। पूरे राज्य की बात करें तो न्यूनतम तापमान लगभग 7 डिग्री तक पहुंच गया है।

शनिवार को रामगढ़ का तापमान पूरे राज्य में सबसे कम 7.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। तापमान में गिरावट के साथ-साथ अब ठंडी हवाओं ने भी सर्द के सितम को और बेरहम बना दिया है। लगभग 10 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चलनेवाली ठंडी हवा के कारण दिन में भी कनकनी और सिहरन का अहसास लोगों को हो रहा है। दिन में भी लोग अब पूरे बदन के गर्म कपड़े पहनकर घूमते देखे जा रहे हैं। मौसम विभाग के अनुसार फिलहाल कुछ दिनों तक मौसम की यही स्थिति रहेगी। बता दें कि बोकारो में 13 दिसंबर को न्यूनतम तापमान 12.5 डिग्री रहा, 14 दिसंबर को 12.1 डिग्री, 15 को 10.1 डिग्री और 16 और 17 दिसंबर तक 8 डिग्री सेल्सियस न्यूनतम तापमान रहा। ठंड से बचाव के लिए दिन में अब दिन में लोग धूप में रहना पसंद करने लगे हैं, वहीं शाम होते ही जगह-जगह अलाव तापते भी देखे जाते हैं। ठंड को देखते हुए जिला प्रशासन की ओर से शहर के विभिन्न चौक-चौराहों पर अलाव की व्यवस्था की गई है, ताकि लोग ठंड से अपना बचाव कर सकें।

बहुत से लोग अपने-अपने घरों में अलाव व रूम हीटर के सहारे ठंड से बचाव में लग गए हैं।

टेंपरेचर फ्लक्चुएशन बच्चों-बुजुर्गों के लिए घातक

तापमान में अप्रत्याशित परिवर्तन बच्चों और बुजुर्गों के लिए काफी खतरनाक माना जाता है। ठंड को देखते हुए मौसम विभाग की ओर से बच्चों व बुजुर्गों को विशेष सावधानी बरतने की अपील की है। तापमान में अचानक होने वाली गिरावट सेहत के लिए कई मायनों में खतरनाक है। तापमान अगर स्थिर रहता है तो शरीर उसी के अनुकूल बना रहता है। अचानक फ्लक्चुएशन से यह लय प्रभावित होती है। ऐसे में वायरल और बैक्टेरियल अटैक का खतरा बढ़ जाता है। इन दिनों वायरल अटैक की अधिक संभावना है। दिनभर की गर्मी के बाद शाम या रात के सर्द में सीधे से निकलने से सांस की बीमारी, बुखार, गले में खराश जैसी समस्याएं भी हो सकती है। वहीं, हृदयरोगियों के लिए तो यह स्थिति बेहद घातक है। तापमान में अचानक कमी से ब्लड क्लॉटिंग के चलते हृदयाघात की संभावना बढ़ जाती है। ब्लडप्रेशर के मरीजों के लिए भी यह खतरनाक है। जबकि, छोटे बच्चों के लिए भी कोल्ड एक्सपोजर खतरनाक है। उन्हें निमोनिया, वायरल डायरिया आदि होने का खतरा बढ़ जाता है।

बचने के लिए अपनाएं ये उपाय

- अनावश्यक रात को घर से बाहर न निकले। बहुत जरूरी होने पर निकलें भी तो जाड़े से बचाव को लेकर पूरे एहतियात के साथ जाएं।
- हृदयरोगी और बीपी के मरीज खास तौर से अहले सुबह सर्द वातावरण के संपर्क में न आएं।
- हार्ट पेशेंट अहले सुबह-सुबह न टहलें। थोड़ी धूप निकलने के बाद वॉक कर सकते हैं।
- छोटे बच्चों को गर्म कपड़े पहनाकर रखें।

गुड न्यूज ऑप्टिकल लाइन सरफेस का किया जा रहा सर्वे, हवाई सेवा की हर बाधा होगी दूर

उड़ान के लिए एक कदम आगे बढ़ा बोकारो, हवाई अड्डा के पास से हटेंगी मटन व चिकन की दुकानें

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : बोकारो एयरपोर्ट से व्यावसायिक हवाई सेवाओं के लिए एक कदम और आगे बढ़ा दिया गया है। भारत सरकार की रीजनल कनेक्टिविटी स्कीम (आरसीएस) से उड़ान (उड़ेगा देश का आम नागरिक) के तहत यहां जल्द से जल्द कॉमर्शियल फ्लाइट शुरू करने के लिए आखिरी सर्वे का दौर चल रहा है। विमान के उड़ान व लैंडिंग तक में जो भी बाधाएं हैं, उनका दसदिवसीय सर्वे करने नई दिल्ली से ऑप्टिकल लाइन सरफेस (ओएलएस) की टीम हवाई अड्डा पहुंची। तीन सदस्यीय टीम अगले 10 दिनों तक एयरपोर्ट का निरीक्षण कर हर एक पहलू की जांच करेगी। विमान के उड़ान में जितनी तरह की बाधाएं उन्हें चिह्नित कर दूर करने के लिए टीम की ओर से एयरपोर्ट अथॉरिटी को रिपोर्ट सौंप दी जाएगी। उसके बाद एयरपोर्ट अथॉरिटी उन बाधाओं को दूर करेगी।

डीजीसीए सहित जहां भी जरूरत होगी, वहां उस रिपोर्ट को दिया जाएगा। सबसे पहले रनवे से उड़ान, फ्लाइट आदि की जांच होगी। विमान के टेक ऑफ से लैंडिंग तक की सभी प्रकार की बाधाओं को दूर किया जाएगा। एयरपोर्ट में जितने भी काम हुए हैं, उन सभी कामों का भी निरीक्षण किया जाएगा। विधायक बिरंची नारायण ने कहा कि ओएलएस की टीम के इंचार्ज मनोहर परब के नेतृत्व में यह सर्वे होगा। यह एयरपोर्ट का आखिरी सर्वे है। अब हमलोग उड़ान के लिए एक कदम आगे बढ़ गए हैं। हवाई अड्डा के आसपास सभी जगहों की साफ-सफाई की जाएगी, ताकि एयरपोर्ट के ऊपर चील, कौआ आदि पक्षी उड़े नहीं। बूचड़खानों को हटाया जाएगा।

हवाई अड्डा की चहारदीवारी से सटे दुंदीबाद हाट के समीप स्थित मीट व चिकेन की दुकानों को हटाया जाएगा, ताकि एयरपोर्ट के आसपास पक्षियों का आवागमन नहीं हो। पक्षियों के आवागमन से विमान की उड़ान व लैंडिंग में बाधाएं उत्पन्न होगी। पहले जिन पेड़ों की कटाई की गई थी, वे फिलहाल बढ़ गए हैं। उनकी कटाई भी होगी। गौरतलब है कि बोकारो हवाई अड्डा में बिजली, यात्री लांज, सिक्योरिटी इक्विपमेंट, सीसीटीवी कैमरा, टावर, रनवे, वाहन पार्किंग और चहारदीवारी का काम पूरा हो चुका है। अब एयरपोर्ट की विद्युत आपूर्ति बाधित नहीं हो, इसके लिए ग्रेडा की ओर से सोलर प्लेट लगाए जाएंगे। यहां मोबाइल एटीसी (एयर ट्रैफिक कंट्रोलर) का इंस्टॉलेशन कर फ्रीक्वेंसी मैचिंग का काम भी पूरा हो चुका है।

50 करोड़ रुपए की लागत से एयरपोर्ट के अधिकतर काम पूरे हो चुके हैं। उन्हीं कामों का टीम की ओर से निरीक्षण किया जाएगा। बोकारो एयरपोर्ट की मैनेजर प्रिया सिंह के अनुसार एयरपोर्ट से विमान के उड़ान व लैंडिंग में आने वाली बाधाओं को कैसे दूर किया जाय, लिए ओएलएस की टीम यहां पहुंची है। टीम यहां 10 दिनों तक निरीक्षण कार्य करेगी। निरीक्षण में 10 दिन से ज्यादा भी लग सकते हैं। यह एयरपोर्ट अथॉरिटी का इंटरनल मामला है।

मॉडल प्लेनेटोरियम बनेगा वर्षों से अधूरा पड़ा बोकारो तारामंडल

तकनीकी टीम को प्लान तैयार करने का निर्देश

संवाददाता

बोकारो : वर्षों से अधूरा पड़े बोकारो के तारामंडल के दिन अब बहुरने वाले हैं। पिछले हफ्ते डीसी कुलदीप चौधरी द्वारा इस दिशा में गंभीरता दिखाए जाने के बाद डीडीसी कीर्ति श्री ने भी जायजा लिया। बता दें कि तकनीकी टीम के साथ उपविकास आयुक्त (डीडीसी) कीर्ति श्री जी. ने सदर अस्पताल का निरीक्षण किया। सदर अस्पताल स्थित ओ.पी.डी., पार्किंग एरिया एवं अस्पताल के रंग-रोगन की स्थिति का जायजा लेते हुए संबंधित टीम को मॉडल प्लान बनाने का निर्देश दिया। इस क्रम में सूचना भवन समीप अर्द्धनिर्मित तारामंडल का भी निरीक्षण किया। तकनीकी टीम को अर्द्धनिर्मित इस संरचना को मॉडल प्लेनेटोरियम के रूप में विकसित करने के लिए प्लान तैयार करने को कहा। इसके अलावा, डीडीसी ने टीम के साथ महावीर चौक, चास अवस्थित जिला परिषद की दुकानों का भी भ्रमण किया। वहां कैसे नई दुकानों का निर्माण किया जाए, इस पर चर्चा करते हुए संबंधित टीम को

दिशा-निर्देश दिया। विदित हो कि पिछले दिनों डीसी व अधिकारियों की टीम ने सूचना भवन के समीप अर्धनिर्मित तारा मंडल के आधारभूत संरचना का जायजा लिया था।

डीसी ने अपर समाहर्ता को भूमि से संबंधित दस्तावेज की जांच करने, भवन प्रमंडल के अभियंता को भवन से संबंधित दस्तावेज की जांच करने और डीसी कार्यालय समीप मुख्य सड़क से तारामंडल तक सड़क निर्माण व नाले के निर्माण को लेकर संबंधित अभियंता को प्राक्कलन तैयार करने को कहा था। डीसी ने कहा कि तारामंडल के अर्धनिर्मित संरचना को जल्द पूरा करने के दिशा में कार्य शुरू किया जाएगा।

किसानों तक सही तरीके से पहुंचाएं सुखाड़ योजना का लाभ : उपायुक्त

निर्देश... बेरमो में विधि-व्यवस्था और राजस्व-संग्रहण सहित कई योजनाओं की समीक्षा

- पिकनिक स्पॉट पर रखें विशेष चौकसी : एसपी

संवाददाता

बोकारो : बेरमो अनुमंडल कार्यालय तेनुघाट के सभागार में शनिवार को उपायुक्त कुलदीप चौधरी तथा पुलिस अधीक्षक की संयुक्त अध्यक्षता में बेरमो अनुमंडल क्षेत्र अंतर्गत विभिन्न विभागों में संचालित योजनाओं की कार्य प्रगति की समीक्षा बैठक हुई। मौके पर अनुमंडल पदाधिकारी बेरमो (तेनुघाट) अनंत कुमार, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सतीश चंद्रा, विभिन्न विभागों के पदाधिकारी, बेरमो अनुमंडल क्षेत्र के सभी प्रखंडों के प्रखंड विकास पदाधिकारी व अंचल अधिकारी उपस्थित थे। समीक्षा के दौरान बेरमो अनुमंडल क्षेत्र में विधि-व्यवस्था, राजस्व-संग्रह, दाखिल-खारिज रजिस्ट्री के आधार पर म्यूटेशन की स्थिति, सामाजिक सुरक्षा, आपदा एवं कोविड-19 से मृत व्यक्तियों के आश्रितों व हकदार को अनुग्रह अनुदान भुगतान से संबंधित अंचल स्तर पर लंबित मामले, मुख्यमंत्री सुखाड़ राहत योजना तथा सड़क सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम से संबंधित पत्र पर इच्छुक स्वयं सेवकों को चिन्हित कर प्रतिवेदन उपलब्ध कराने से संबंधित विषयों पर समीक्षा की गई। उपायुक्त श्री चौधरी ने कहा कि जिला अंतर्गत चल रहीं जनकल्याणकारी योजनाओं से कोई भी योग्य लाभुक वंचित नहीं रहेगा। सभी को सूचीबद्ध किया जा रहा है। किसी तरह से कोई छूट न जाए, इसका विशेष ख्याल रखा गया है। सुखाड़ से प्रभावित किसानो को लाभ सरल रूप से पहुंचाया जा सके, इसे ध्यान में रखते हुए प्रत्येक अधिकारी को सख्त निर्देश दिया गया है।

सभी जरूरतमंद तक सरकार द्वारा संचालित योजनाओं को पहुंचाने मे सभी का सहयोग आवश्यक है। जनकल्याण योजना के लाभ उन तक अवश्य पहुंचे। उपायुक्त ने अनुमंडल कार्यालय के जर्जर भवन को देखते हुए बताया कि बहुत जल्द इस जर्जर भवन का कायाकल्प होगा इसके लिए सरकार को प्रस्ताव भेज दिया गया है। उपायुक्त ने सभी पदाधिकारियों को लक्ष्य के अनुरूप योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने व सुधार लाने का निर्देश दिया। साथ ही, कार्य की प्रगति का मूल्यांकन अनुमंडल पदाधिकारी बेरमो को करने को कहा तथा उक्त क्षेत्र के प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं अंचल अधिकारी के कार्यो को नियमित मॉनिटरिंग करने का भी निर्देश दिया। एसपी चन्दन कुमार झा ने विधि व्यवस्था सुचारू रूप से चलाने एवं पिकनिक स्पॉट पर विशेष चौकसी रखने का निर्देश दिया है। बैठक के दौरान विभिन्न विभागों के पदाधिकारी एवं सभी थाना प्रभारी सहित अन्य उपस्थित थे।

दुस्साहस दिन में मोहल्लों की रेकी करते हैं बदमाश, रातों को घटना को देते हैं अंजाम

चोरों का आतंक, सेक्टर- 3 में 7 दिन में 4 चोरियां

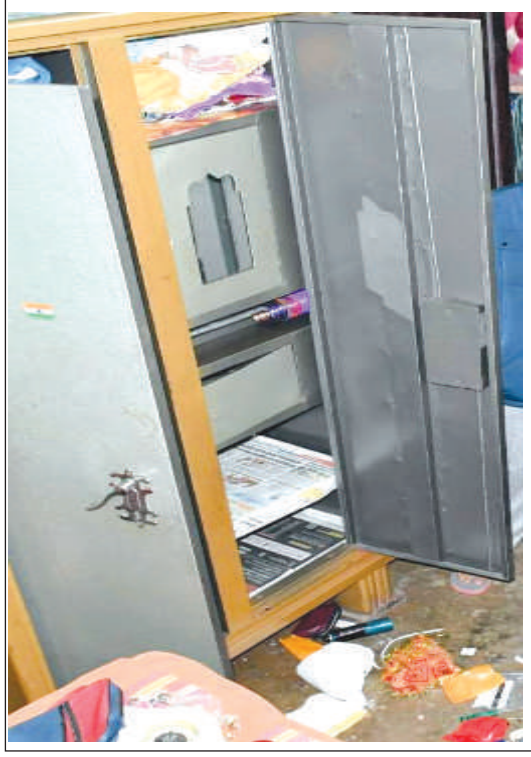

संवाददाता

बोकारो : बोकारो में चोरों का आतंक इन दिनों एक बार फिर काफी बढ़ गया है। पुलिस की शिथिलता और लोगों की लापरवाही की वजह से न तो चोरी घटनाएं थम रहीं और न ही बदमाशों का मनोबल कम हो रहा है। इसी कड़ी में सेक्टर-3 इलाके में एक हफ्ते में चोरी की चार-चार घटनाएं हो गईं और पुलिस के हाथ अबतक कोई भी सुराग हाथ नहीं लग सका है। चोरों ने एक ही रात सेक्टर-3बी दो आवासों को निशाना बनाया। आवास संख्या- 481 में कांग्रेस नेता संजय कुमार ठाकुर की बहन के घर से चोर लगभग छह लाख रुपए मूल्य के गहने व अन्य कीमती सामान लेकर चंपत हो गए। संजय की बहन पूरे परिवार के साथा दो दिन पहले अपने गांव पलामू गई थी। इसी बीच चोरों ने बंद आवास का ताला को तोड़कर चोरी की घटना को अंजाम दिया। आलमारी में रखे करीब 6 लाख के गहने के साथ कई कीमती समान लेकर निकल गए। सी आवास के पास ही सेक्टर-3बी में एनके शर्मा के आवास संख्या-474 का भी ताला तोड़कर चोरों ने गहने की चोरी की। इसके अगले ही दिन सेक्टर-3ई में आवास संख्या- 404 निवासी सत्येंद्र पांडेय के घर से लाखों के गहने चोर ले गए। इसके पहले, सेक्टर-3 डी के आवास संख्या-81 का ताला तोड़कर विजय दास के घर भी चोरों ने घटना को अंजाम दिया था। बताया जाता है कि इन दिनों सेक्टर-3 के गली-मुहल्लों में कुछ अनजान युवक घूमते देखे जा रहे हैं। संभवतः वे लोग ही चोरी के लिए पहले रेकी करते हैं और मौका देख चोरी को अंजाम दे डालते हैं। स्थानीय लोगों ने कहा कि पुलिस की गश्ती सुस्त होने के कारण चोर आराम से अपने नापाक मंसूबों में कामयाब हो जाते हैं। चोरी की बढ़ती घटनाओं से क्षेत्र के लोगों में जहां दहशत है, वहीं पुलिस की कार्यशैली के प्रति रोष भी।

हफ्ते की हलचल

विजय दिवस पर 1971 के युद्धवीर किए गए सम्मानित

बोकारो :1971 युद्ध के विजय दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद की बोकारो इकाई द्वारा स्थानीय सिटी पार्क स्थित शहीद उद्यान में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर देश के अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ-साथ उस युद्ध में शामिल जांबाज सैनिकों को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोकारो स्टील प्लांट के अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीके तिवारी उपस्थित रहे। जबकि, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के महानगर कार्यवाह संजय, सेवा प्रमुख अविनाश, मनोज अग्रवाल, सांसद प्रतिनिधि अशोक कुमार वर्मा, राजीव कंठ, रामसुमेर सिंह, नीरज कुमार, योगेंद्र कुमार, मनीष पांडेय, सहित अन्य संगठनों के सदस्य भी मौजूद रहे। इस अवसर पर 1971 के युद्ध में शामिल चंद्रिका तिवारी (1956), वशिष्ठ प्रसाद सिंह (1961), बिहारी सिंह (1963), एसके सिंह (1965) एवं प्रह्लाद प्रसाद वर्णवाल (1965) को संगठन की तरफ से सम्मानित किया गया। इन युद्धवीरों ने भी अपने संबोधन में युद्धकाल के संस्मरण साझा किए तथा युवाओं में सदैव राष्ट्रप्रेम के जज्बे की लौ जलाए रखने का आह्वान किया। कार्यक्रम में संगठन के जिला अध्यक्ष शत्रुघ्न सिंह, पूर्व जिलाध्यक्ष मनोज झा, जिला मंत्री संजीव कुमार, राजीव रंजन सिन्हा, राजहंस, मुन्ना प्रसाद, मनोज कुमार, नीरज तिवारी, परमहंस, मनीष चंचल, सुरेश कुमार, मुकेश कुमार, दीपक कुमार, सरयू शर्मा, विनय कुमार आदि पूर्व सैनिक शामिल रहे। कार्यक्रम का संचालन पूर्व सैनिक सेवा परिषद के प्रांतीय उपाध्यक्ष दिनेश्वर सिंह और धन्यवाद ज्ञापन वेटरन नौसैनिक राकेश मिश्रा ने किया। इस क्रम में पूर्व सैनिकों ने भी अपने पुराने अनुभवों को साझा किया।

टैलेंट हंट में चिन्मय विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने किया मोहित

बोकारो : चिन्मय विद्यालय के तपोवन सभागार में कक्षा प्रथम के छात्र-छात्राओं के लिए टैलेंट हंट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें नन्हे बच्चों ने शानदार नृत्य, फैशन शो का प्रदर्शन कर सबको मोहित कर दिया। विद्यालय सचिव महेश त्रिपाठी, प्राचार्य सूरज शर्मा ने कहा कि नृत्य मानव अभिव्यक्ति का एक रसमय भावनाओं से भरा प्रदर्शन है। यह एक सार्वभौम कला है, जिसका जन्म मानव जीवन के साथ हुआ है। जब आप नृत्य करते हैं तो आपको बेहतर हृदय स्वास्थ्य, मजबूत मांसपेशी, याददाश्त में सुधार, तनाव में कमी, ज्यादा ऊर्जा जैसे कई शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं। प्रतियोगिता की मुख्य निर्णायक शबार्नी मुखर्जी थी, जिन्होंने बच्चों के नृत्य प्रदर्शन को देखा तथा उनके ऊर्जा और कठिन परिश्रम की सराहना की। अकादमिक पर्यवेक्षिका रश्मि शुक्ला और क्रियाकलाप इंचार्ज दीप्ति पारीक की मौजूदगी में इस प्रतियोगिता को संपन्न किया गया। जिसमें कक्षा एक की सभी कक्षा शिक्षिकाएं मौजूद थीं। कक्षा -प्रथम की सभी सेक्शनों से बच्चों की अच्छे प्रदर्शन के लिए उन्हें पुरस्कृत भी किया गया।

लोकनृत्य प्रतियोगिता में बच्चों ने बिखेरी बहुरंगी छटा

बोकारो : सांस्कृतिक और पारंपरिक विविधता हमारे देश की अमूल्य धरोहर हैं। बच्चों में छात्र-जीवन से ही अपनी संस्कृति और परंपरा से जुड़ाव आवश्यक है, तभी हम इस धरोहर को अक्षुण्ण बनाए रख सकते हैं। ये बातें डीपीएस चास में डॉ. राधाकृष्णन सहोदया स्कूल कॉम्प्लेक्स के तत्वावधान में आयोजित अंतर विद्यालय सामूहिक लोकनृत्य प्रतियोगिता समारोह में बतौर मुख्य अतिथि जिले के एसपी चंदन कुमार झा ने कही। विशिष्ट अतिथि डीएस मेमोरियल के सचिव सुरेश अग्रवाल ने बच्चों को सुसंस्कृत बनाने का संदेश दिया। कार्यक्रम में बोकारो जिले के 15 प्रतिष्ठित विद्यालयों के विद्यार्थियों ने झारखंड की विभिन्न लोक संस्कृति-जन्य आकर्षक परिधानों में सजकर अपनी कलात्मक प्रतिभा दिखाई। प्रतियोगिता में पहले स्थान पर क्रिसेंट पब्लिक स्कूल बोकारो की टीम रही, जबकि डीपीएस बोकारो और एमजीएम हायर सेकेंडरी स्कूल बोकारो ने क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त किया। विद्यालय की प्रभारी प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे ने डीपीएस चास द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास को लेकर किए जा रहे प्रयासों की चर्चा की। डीपीएस चास की चीफ मेंटर डॉ. हेमलता एस. मोहन ने नई पीढ़ी को लोक-संस्कृति व परंपराओं से जोड़ने की दिशा में इस प्रकार के आयोजनों की आवश्यकता पर बल दिया।

डाक टिकट डिजाइन प्रतियोगिता में सीतेश व सतीश बने जूरी मेंबर

बोकारो : डाक विभाग, झारखंड सर्किल द्वारा डोरंडा स्थित प्रधान डाकघर में आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान आयोजित डाक टिकट डिजाइन प्रतियोगिता में सफल प्रतिभागियों की चयन-प्रक्रिया आयोजित की गई। इसमें बोकारो के जाने-माने फिलाटेलिस्ट (डाक टिकट संग्रहकर्ता) सीतेश आजाद और सतीश कुमार जूरी मेंबर के रूप में शामिल हुए। सीतेश ने जूरी मेंबर के रूप में शामिल किए जाने पर हर्ष जताया तथा डोरंडा एचपीओ के प्रति आभार जताया। उन्होंने कहा किस्टांप डिजाइन में सर्वश्रेष्ठ को जूरी के तौर पर अच्छे में सबसे अच्छा चुनना काफी चुनौतियों से भरा था। पूरे झारखंड के विभिन्न विद्यालयों के स्टांप डिजाइन में श्रेष्ठ 5 को चुनना सीतेश ने एक अलग और खास अनुभव बताया। बता दें कि डाक टिकट संग्रहण के मामले में सीतेश को काफी ख्याति मिली है। पोस्टल स्टांप के अलावा उनके पास पुरानी से पुरानी मुद्राओं का भी अद्वितीय संग्रह है।

3 दिन, 72 मौतें... हर घंटे जा रही एक जान, नीतीश की संवेदनहीनता की चौतरफा आलोचना

कातिल कौन, शराब या सुशासन ?

विशेष संवाददाता

पटना : शराब पीना सेहत के लिए हानिकारक है। यह चेतावनी शराब की बोतलों पर लिखी रहती है और ऐसा है भी। लेकिन, इसका पालन लोग नहीं करते और शराब पीना नहीं छोड़ते। बिहार में शराबबंदी तो कहने के लिए जनहित को ध्यान में रखकर शुरू की गई थी, लेकिन आज यही शराबबंदी जान पर भारी बन पड़ रही है। जितनी सख्ती के साथ सुशासन बाबू यानी नीतीश कुमार ने शराबबंदी कानून को लागू कर दिया, उतनी ही संजीदगी अगर नकली और अवैध शराब के कारोबारियों के खिलाफ दिखाई होती, तो आज सारण से लेकर सिवान तक तीन दिन के भीतर 72 लोगों की मौत न होती। कभी झारखंड, कभी यूपी तो कभी नेपाल सीमा से होकर बिहार में अवैध शराब का कारोबार लगातार जारी है। दूसरे शब्दों में कहें, तो शराबबंदी के कारण सीधे सरकार को राजस्व-प्राप्ति तो नहीं हो पा रही, लेकिन इस कानून के बनने के साथ शुरू हुआ अवैध धंधेबाजों का काला धंधा लगातार जारी है और इसमें सफेदपोश से लेकर वर्दीधारियों की मिलीभगत से भी इनकार नहीं किया जा सकता। अब हद तो यह हो गई कि ये अवैध धंधेबाज पैसे की खातिर लोगों की जान के दुश्मन हो गए और जहर को शराब के रूप में परोसकर अवैध रूप से बेच रहे हैं। शराब के आदी लोग इससे अनजान वह जहर की घूंट पीकर असमय काल के गाल में समा रहे हैं। पिछले दिनों खबर लिखे जाने तक महज तीन तीन के भीतर छपरा, सारण, सिवान और बेगूसराय को मिलाकर 72 लोगों की मौत जहरीली शराब पीने से हो गई। यानी हर घंटे एक व्यक्त की जान जा रही है। इसमें संवेदनहीनता की पराकाष्ठा यह है कि राज्य के मुखिया को लोगों की जान की तनिक भी परवाह नहीं। वह आपदा की इस घड़ी में संवेदना दिखाने की बजाय खुलेआम कहते फिर रहे कि जो पिएगा, वो मरेगा। अगर सरकार मृतकों के प्रति सहानुभूति नहीं रख सकती, तो जहर बेचनेवाले धंधेबाजों के खिलाफ सख्त कार्रवाई तो करते। लेकिन, शायद उन्हें इससे क्या।

बीते हफ्ते मंगलवार से बिहार के छपरा में जहरीली शराब पीने से मौत का सिलसिला शुरू हुआ था, जो खबर लिखे जाने तक 72 तक पहुंच गया और मौत की आग की लपट अन्य जिलों में भी पहुंच गई। शराब पीने के साथ ही कई लोगों की हालत गंभीर हो गई और पहले ही दिन 17 लोगों ने दम तोड़ दिया। यह आंकड़ा लगातार बढ़ता चला जा रहा।

शुकवार को सिवान में भी जहरीली शराब का तांडव देखने को मिला। यहां थाने के एक चौकीदार समेत पांच लोगों की मौत हो गई। अस्पताल कर्मियों ने बताया कि जिन्हें पहले से कोई बीमारी थी, उनकी हालत शराब पीते ही बिगड़ गई। शराब पीने वालों की हालत एक जैसी ही दिख रही थी। पहले आंखों से दिखना बंद होता था, फिर पेट में सूजन होता था। गले में सूखेपन के बाद बीपी डाउन हो जाता था और शरीर के कई अंग काम करना बंद कर दे रहे।

इधर, सियासत तेज... विधानसभा व लोकसभा में भी गूंजा मामला

विरोधी बोले- 6 साल में 1000 से ज्यादा लोगों ने गंवाई जान, मगर मुख्यमंत्री संवेदनहीन

नीतीश कुमार के असंवेदनशील बयान पर विपक्ष के नेताओं में भारी उबाल है। बीजेपी लगातार नीतीश सरकार पर हमलावर है। इसको लेकर विधानसभा में भी भारी हंगामा देखने को मिला। इस मामले में केंद्रीय मंत्री गिरीराज सिंह ने कहा है कि यह बिहार का दुर्भाग्य है कि जब से यहां शराब नीति चली है तब से कई हजार लोग मर गए, मगर मुख्यमंत्री की संवेदना नहीं जगती। सुशील मोदी ने कहा है कि शराबबंदी लागू होने के बाद 6 साल में 1000 से ज्यादा लोगों की जहरीली शराब से मौत हुई है। 6 लाख लोग जेल भेजे गए। वहीं, तेजस्वी यादव ने कहा कि जहरीली शराब से बिहार से ज्यादा गुजरात में मौतें हुई हैं। गलत करोगे तो गलत होगा। दूसरी तरफ, बिहार के छपरा जिले में जहरीली शराब से मौत का मुद्दा लोकसभा में भी गूंजा। भाजपा सांसदों ने नीतीश सरकार को घेरते हुए कहा कि बिहार सरकार सामूहिक हत्याएं करा रही है। भाजपा सांसद संजय जायसवाल ने कहा कि नीतीश कह रहे जो पिएगा, वो मरेगा, लेकिन वो शराब बेचने वाले लोगों को टिकट दे देते हैं। उन्होंने कहा कि इन मौतों की जिम्मेदार नीतीश सरकार ही है। एक तरफ लोग मर रहे हैं, दूसरी ओर नीतीश कुमार विधानसभा में आपा खो रहे हैं।

पूर्व सीएम तक कर चुके हैं शराबबंदी नीति हटाने की मांग

जानकार बताते हैं कि प्रशासनिक अनदेखी के चलते आज भी धड़ल्ले से बिहार के अंदर शराब बिक रही है। अफसर सबकुछ जानते हैं, फिर भी कुछ नहीं करते हैं। कई जगहों पर तो प्रशासनिक अफसर और नेता भी इसमें शामिल रहते हैं। यही कारण है कि शराबबंदी के बावजूद राज्य में इस तरह की घटनाएं हो जाती हैं। इन घटनाओं के बाद जिम्मेदार अफसरों पर भी कोई कार्रवाई नहीं होती है। बिहार में एक तरफ झारखंड तो दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश से शराब आती है। बॉर्डर पर शराब तस्करों को रोकने के लिए कोई खास व्यवस्था भी नहीं है। ऐसा इसलिए, क्योंकि सरकार में बैठे बहुत से नेता-मंत्री खुद इससे जुड़े रहते हैं। पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी तो कई बार बोल चुके हैं कि शराबबंदी कानून गलत है। इसे हटाया जाना चाहिए। छपरा में भुक्तभोगी के परिजनों ने भी कहा कि थाने को सब पता था, लेकिन कार्रवाई नहीं की गई। मशरक थाने के पीछे दुकान पर काम करने वाले फिरोज ने बताया कि मोहल्ले में शराब बिकती रही है। थाने में सब पता था, लेकिन वह जान-बूझकर खामोश रहते हैं।

मुख्यमंत्री से मिले डॉ. लंबोदर, क्षेत्र की समस्याओं की ओर ध्यान कराया आकृष्ट

संवाददाता

बोकारो : गोमिया विधायक डॉ लंबोदर महतो ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मिलकर अपने विधानसभा क्षेत्र की कई समस्याओं की ओर उनका ध्यान आकृष्ट कराया और उनसे समाधान का आग्रह किया। उन्होंने मुख्यमंत्री से विभिन्न पथों का चौड़ीकरण व सुदृढ़ीकरण, आईईएल स्थित आवास बोर्ड के क्वार्टरधारियों को न्याय दिलाने, नेमरा बंगाल सीमाना जरीडीह बंगाल सीमाना तक किए गए कार्य में रैयतों का मुआवजा भुगतान कराने और ग्राम खुदीबेड़ा में एलाइनमेंट बदलने पर बारी- बारी से चर्चा की। उन्होंने मुख्यमंत्री से ललपनिया से रजरप्पा भाया बड़की पुन्नू पथ कुल 15 किलोमीटर, ललपनिया लुगूबुरु घंटा बाड़ी धर्म स्थल का पहुंच पथ कुल सात किलोमीटर एवं गझंडी से हुरलूंग भाया चतरोचट्टी 25 किलोमीटर के चौड़ीकरण व सुदृढ़ीकरण करने पर चर्चा की। इस क्रम में उन्होंने मुख्यमंत्री को इस बात से अवगत कराया कि झारखंड राज्य आवास बोर्ड द्वारा विगत बरसात के समय में 57 क्वार्टरधारियों को उनके क्वार्टर से जबरन हटाकर उन्हें सील कर दिया गया है, जिसके कारण 500 से ज्यादा लोग बेघर हो गए हैं तथा सड़क पर जीवन गुजर-बसर करने को बाध्य होना पड़ रहा है। पुनः इस कंपकपाती ठंड में आवास बोर्ड के द्वारा 150 क्वार्टर धारियों को एवं इन क्वार्टरों में रहने वाले करीब एक हजार से ज्यादा लोगों को बेघर किया जा रहा है।

साथ ही अगले चरण में लगभग 800 क्वार्टरों में रहने वाले लगभग 4000 से ज्यादा ज्यादा लोगों को आवास बोर्ड द्वारा बेघर किए जाने की तैयारी कर रहा है। इसको देखते हुए गोमिया में आवास बोर्ड क्वार्टरों में रहने वाले परिवार को नियमित किया जाना युक्तिसंगत और व्यावहारिक रहेगा। उन्होंने मुख्यमंत्री को इस बात से भी अवगत कराया कि पथ निर्माण विभाग द्वारा रामगढ़ एवं बोकारो जिले के नेमरा बंगाल सीमाना से जरीडीह बंगाल सीमाना तक किए जा रहे पथ निर्माण कार्य में अब तक जिन रैयतों को जमीन पथ अधिग्रहित किया गया है उनके मुआवजा का भुगतान किए बिना संवेदक के द्वारा पथ निर्माण कार्य किया जा रहा है, जिसके कारण रैयतों में आक्रोश है।

साथ ही उक्त योजना में कसमार प्रखंड के खुदीबेड़ा गांव में लगभग 140 लोगों का आवास भी टूटने के कगार पर है जिसके कारण वहां के ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है। फलतः ग्राम खुदीबेड़ा के उक्त सड़क का एलाइनमेंट बदलते हुए गांव के बाहर पश्चिम दिशा में सरकारी जमीन में करने की आवश्यकता है। उन्होंने मुख्यमंत्री से इन सभी समस्याओं पर चर्चा करते हुए समाधान करने की दिशा में शीघ्र समुचित कार्रवाई करने का आग्रह किया। मुख्यमंत्री ने सारी बातों को सुनने के बाद उनकी मांगों पर उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया। उन्होंने विधायक द्वारा लगातार क्षेत्र की समस्याएं उठाने की सराहना की।

मुकेश ने संभाली सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की कमान

निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया

संवाददाता

रांची : झारखंड के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के नये निदेशक की कमान मुकेश कुमार ने संभाल ली है। श्री कुमार ने शुक्रवार संध्या अपना प्रभार ग्रहण किया। नये निदेशक श्री कुमार यह प्रभार पूर्व निदेशक राजीव लोचन बक्शी से ग्रहण किया। मालूम हो कि राज्य सरकार ने कई भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों का तबादला किया था, जिसमें भरतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी मुकेश कुमार को कल्याण आयुक्त के पद से सूचना जन संपर्क विभाग का निदेशक का प्रभार दिया था। इस मददेनजर शुक्रवार की संध्या श्री कुमार सूचना भवन पहुंच कर प्रभार ग्रहण किया। इसके बाद वे विभाग के अधिकारियों के साथ औपचारीक भेंटवार्ता कर परिचय लिया। मौके पर सुचना जन संपर्क विभाग के सहायक निदेशक शालिनी वर्मा, सहायक निदेशक बीरू कुशवाहा,सहायक निदेशक सुनिता धान, सहायक निदेशक अभय कुमार समेत विभाग के पदाधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद थें। भारतीय प्रशासनिक सेवा के कई अधिकारियों का गुरुवार देर शाम तबादला किया गया है. साथ ही कई अधिकारियों को अपने कार्यों के साथ अतिरिक्त प्रभार भी सौंपा गया है. श्री कुमार दो साल पहले बोकारो में उपायुक्त के रूप में पदस्थापित थे। कोरोना नियंत्रण की दिशा में उन्होंने खास भूमिका निभाई थी। बोकारो के बाद रांची नगर निगम आयुक्त वह बने थे।

आनन्द की अनुभूति ही जीवन का सौन्दर्य

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

जीवन को स्वच्छंद नहीं, बल्कि स्वतंत्र बनाये रखना है। क्योंकि, स्वतंत्र और स्वच्छंदता में बड़ा ही अन्तर है। स्वच्छंद तो सब मर्यादाओं को तोड़ देता है, लेकिन स्वतंत्र व्यक्तित्व इस संसार में निरन्तर मर्यादाओं के साथ गतिशील रहता है।...और गुरु का कार्य अपने शिष्य को स्वतंत्र बनाना है।

उद्यमं साहसं धैर्यं विद्यां बुद्धिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र दैव सहायकृत।।

परिश्रम, साहस, धैर्य, ज्ञान, विवेक, पराक्रम- इन छह गुणों के आधार पर ही आप अपने जीवन को गति दे सकते हो। जहां ये छह गुण रहते हैं, उस मनुष्य को देवता भी अवश्य ही सहयोग प्रदान करते हैं। इन छह गुणों का मूल स्रोत है- विचार।

विचार तो निरंतर और निरंतर चलते ही रहते हैं। एक मन है और लाख विचार। फिर उन विचारों के ऊपर आ गए हैं दूसरों के विचार, बड़ी-बड़ी बातें, जीवन मूल्य, जीवन सिद्धांत, जीवन आदर्श की बड़ी-बड़ी बातें।

इन सिद्धांतों, बड़ी-बड़ी परिभाषा, बड़े-बड़े प्रेरणादायक आख्यानों पर आपका मन उलझ कर रह जाता है। क्या करूं, किस सिद्धान्त पर चलूं? क्या, मेरे मन में जो विचार उभर रहे हैं, वे सही हैं?

हिमालय से सैकड़ों धाराएं निकलती हैं, क्या किसी धारा ने यह पूछा कि- मैं किस दिशा में जाऊं? क्या कभी कोई नदी यह पूछती है कि मेरे बहने का मार्ग क्या होना चाहिए? क्या कभी किसी नदी ने यह कहा है कि मेरा मार्ग बिल्कुल सपाट, सीधा और सरल होना चाहिए? वह तो निकल पड़ती है अपना स्वयं का मार्ग बनाते हुए। कहीं मैदान आया, कहीं पठार आया, कहीं जंगल आया, कहीं और बाधा आई, परन्तु वह चल पड़ी तो चलती ही रही।

यह नदी क्या है? जल प्रवाह है और यह जल प्रवाह शक्ति को प्रकट करता है और जब शक्ति चल पड़ती है तो वह किसी को नहीं पूछती कि मेरा मार्ग क्या होना चाहिए? मेरा सिद्धान्त क्या होना चाहिए? बस, मुझे दौड़ना है, वेग से बहना है, रुकना नहीं है, चाहे कैसा भी मौसम आ जाए, कोई भी बाधा आ जाए, मुझे गतिशील रहना है।

ऐसा ही विचार जब आपका हो जाता है तो बड़ी-बड़ी परिभाषाएं बेमानी लगती हैं, तब क्यों आपने कुछ परिभाषाओं के बीच में अपने जीवन को जकड़ कर रखा है? अपने स्वतंत्रता के भाव को सदैव बनाये रखिए।

गुरु का कार्य अपने शिष्य को स्वतंत्र बनाना है। स्वतंत्र और स्वच्छंदता में बड़ा ही अंतर है। स्वच्छंद तो सब मर्यादाओं को तोड़ देता है, लेकिन स्वतंत्र व्यक्तित्व इस संसार में निरंतर मर्यादाओं के साथ गतिशील और क्रियाशील रहता है।

एक बात को ध्यान से समझें। आप अपनी जिन्दगी को 1 0 0

अध्याय की किताब समझो और इस किताब की कहानी भी बड़ी विचित्र है। आपकी जिन्दगी की किताब की तरह इसमें कोई अध्याय पूरा होता है, जिसकी शुरुआत से अंत तक सब कुछ अच्छा-अच्छा होता है। जैसा आप सोचते हो, उस तरह से खुशनुमा शुरुआत होती है और खुशनुमा अन्त Happy Ending भी होता है।

जिन्दगी का कोई अध्याय जल्दी ही खत्म हो जाता है, कोई देर से खत्म होता है। इसी जिन्दगी का कोई अध्याय अधूरा ही खत्म हो जाता है, जिसके लिए हम तैयार नहीं थे, सोचा ही नहीं था कि यह अधूरा रह जाएगा। और तो और, हम अपनी जिन्दगी में अपने कर्म फल को भी नियंत्रित नहीं कर सकते हैं।

जिन्दगी की इस किताब में यह भी नहीं कह सकते कि कौन हमें कब तक प्रेम करता रहेगा, कौन हमारी जिन्दगी से कब हट जाएगा, कब बिछड़ जाएगा।

ये सारे जिन्दगी के अध्याय हैं, Lesson हैं, जो एक के बाद एक आते रहते हैं और कौन सा अध्याय कब घटित होगा, कुछ मालूम नहीं।

पर, एक बात है- जिन्दगी इतनी कड़वी नहीं है। जिन्दगी के सारे अध्याय इतने कटु नहीं हैं।

जिन्दगी से एक बात अच्छी तरह से समझ सकते हैं कि हमारे लिए वह क्षण महत्वपूर्ण है, जिसमें आनन्द की वर्षा हो। यह अनुभूति ही जीवन का सौन्दर्य है, आनन्द है।

एक बात कहूं, अपने अनुभव से नहीं कह रहा हूं, अपने विचार से कह रहा हूं। यह जिन्दगी एक नदी है, कभी भी एक ढर्रे पर, एक राह पर नहीं चलती है। बदलाव ही सृष्टि का नियम है, जीवन का नियम है, शाश्वत नियम है।

जिन्दगी में सबसे बड़ी स्वतंत्रता यह है कि जीवन एक सीधे-सादे सपाट रास्ते पर चलता ही नहीं है। इसलिए जीवन को स्वतंत्र कहा गया है। आप जिन्दगी में कभी भी स्वतंत्रता का अनुभव कर सकते हैं, यही तो सबसे बड़ी स्वतंत्रता है।

इसके लिए मैं कोई ज्ञान आपको देने नहीं आया हूं। बस इतना कहता हूं कि अपने मन की किताब को बंद मत रखिए, उसे खोलते रहिए, नए-नए अध्याय आएंगे, कुछ पूरे होंगे, कुछ अधूरे रहेंगे।

याद है ना, पतझर के बाद जो फूल गिर जाते हैं, वही बीज बनकर नए पौधे बनते हैं, नई जिन्दगी बनती है। फिर नए पुष्प लगते हैं, फिर बहार आती है।

आवश्यक है स्व-सम्मोहन, आवश्यक है स्व-वशीत्व और करने चले हो दूसरों को सम्मोहित, दूसरों को प्रभावित, दूसरों का वशीकरण। करो अपने मन को सम्मोहित, अपने मन को आनन्दित। इस मन में, इस कुण्डलिनी में, इस शक्ति में सुगन्ध है, प्रवाह है, आनन्द है और यह आनन्द तब ही है, जब तुम अपने विचारों की रक्षा करते हुए, अपने विचारों से गतिशील होते हो।

तुम्हारा मन आनन्द का सृजन कर रहा है, तो वह मन प्रेम से बहता रहेगा, निरन्तर गतिशील रहेगा।

क्षण में आनन्द लेना है और उस क्षण को मन के कोनों में सजा देना है। धीरे-धीरे मन में आनन्द के क्षणों का भंडार हो जाएगा। फिर काहे की चिन्ता, जीवन में जो आएगा, तो देखा जाएगा।

अरे! जीवन अज्ञात है इसीलिए तो जीने का मजा है।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। धनागम होगा। विद्यार्थी वर्ग की शिक्षा में अपेक्षा के अनुरूप फल प्राप्त होगा। वाणी पर संयम रखें। व्यर्थ के झगड़े-विवाद से दूर रहें। रोजगार के योग बनेंगे। शत्रु पराजय होंगे।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वू वे वो) - स्वास्थ्य में सुधार होंगे। रोजगार सम्बन्धी कार्यों में सफलता के योग बनेंगे। प्रतिष्ठित लोगों से लाभ प्राप्त हो सकती है। कार्यों की सफलता में देर होगी। दाम्पत्य जीवन में थोड़ी कड़वाहट हो सकती है।

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा) - स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। भाग्य में वृद्धि । धनागम के योग बनेंगे। राज्याधिकारियों से मुलाकात होगी। व्यावसायिक विस्तार हो सकते हैं। शत्रुओं पर विजय।

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो) - पेट की समस्याओं को लेकर स्वास्थ्य में सुधार होगा। स्त्री से सम्बन्ध सुधरेंगे। धनागम के योग बनेंगे। घर में आनन्द एवं सुखमय का माहौल बनेगा। शत्रुओं पर विजय। सन्तान के स्वास्थ्य पर कुछ बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे) - अपयश के योग होंगे। वाणी पर संयम रखें। स्त्री से विवाद होंगे। प्रेमादि में व्यर्थ का समय नही गवाएं। शत्रुओं पर विजय होगी। अच्छा स्वास्थ्य एवं मानसिक सुख प्राप्त करेंगे।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) - मन प्रसन्न रहेगा। पदोन्नति या व्यवसाय में वृद्धि होगी। विद्यार्थीवर्ग को सफलता प्राप्त होंगे। शत्रुओं पर आसानी से विजय प्राप्त होगी। मनोकामनाएं पूर्ण हो सकती है।

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते) - स्वास्थ्य में सुधार होंगे। धन की प्राप्ति के योग बनेंगे। सुख-आनन्द की प्राप्ति हो सकते हैं। मनोरंजन की योजनाएं बनेंगी। नेत्र कष्ट हो सकते हैं। वाहनादि के योग बनेंगे।

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू) - मानसिक दुविधा से गुजरेंगे। स्वजनों से मनमुटाव होंगे। संगीत से लगाव बढ़ावें तो मानसिक लाभ होगा। वाणी पर संयम रखें। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी।

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे) - मन चंचलता से भरा होगा। निर्णय लेने में असावधानी नही बरतें। साहस में बढ़ोतरी होगी। वाणी पर संयम रखें। धन की प्राप्ति हो सकती है। विद्या की बढ़ोतरी होगी। स्त्री-सुख मिलेगा। गायन-वादन में रुचि बढ़ेगी।

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी) - स्वास्थ्य में सुधार। मित्रों से सहायता मिलेगी। व्यावसायिक लाभ मिलेगा। पदोन्नति होगी। व्यय अधिक हो सकते हैं।

कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। नेत्र सम्बन्धी समस्या हो सकती है और सिरदर्द भी हो सकता है। पदोन्नति के योग बनेंगे। पिता से धन लाभ। भोजन से अरुचि हो सकती हैं। विद्यार्थी मेहनत करें तो ही सफलता प्राप्त होगी।

मीन (दी दू थ झ दे दो चा ची) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। ज्वर सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। जल सम्बन्धी व्यवसाय से लाभ प्राप्त होंगे। मित्रों और पारिवारिक सदस्यों से मुलाकात होगी।

अधिक जानकारी के लिए
संपर्क करें- 7808820251

बीएसएल के ब्लास्ट फर्नेस ने बनाया नया कीर्तिमान

निदेशक प्रभारी ने दी कर्मियों को बधाई, कहा- जारी रखें बेहतरी का सिलसिला

संवाददाता

बोकारो : बीएसएल के ब्लास्ट फर्नेस की टीम ने पहली बार चार फर्नेस के परिचालन से 15015 टन हॉट मेटल का उत्पादन कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इससे से पहले ब्लास्ट फर्नेस के कर्मियों ने 27 मार्च 2022 को चार फर्नेस के परिचालन से 14912 टन हॉट मेटल का उत्पादन कर रिकॉर्ड बनाया था। इस सिलसिले में बुधवार को बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश ने अपने वरिष्ठ सहयोगियों के साथ ब्लास्ट फर्नेस जाकर टीम ब्लास्ट फर्नेस को इस उपलब्धि पर बधाई एवं शुभकामनाएं दी। श्री प्रकाश ने ब्लास्ट फर्नेस के अधिकारियों एवं कर्मियों को आने वाले समय में भी बेहतर प्रदर्शन के इस सिलसिले को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीके तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक (सेवाएं) अनिल कुमार, मुख्य महाप्रबंधक (सीईडी) शालिग्राम सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (मैकेनिकल) वीके सिंह, कार्यकारी मुख्य महाप्रबंधक (ब्लास्ट फर्नेस) प्रवीण कुमार, महाप्रबंधक (ब्लास्ट फर्नेस) महेंद्र प्रसाद, महाप्रबंधक (ब्लास्ट फर्नेस) गुलशन कुमार सहित ब्लास्ट फर्नेस विभाग के अन्य वरीय अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।

सीएसआर गतिविधियों व उत्पादन पहलुओं का जायजा ले गए इस्पात मंत्रालय के ओएसडी

इस्पात मंत्रालय के ओएसडी एनएन सिन्हा का दोदिवसीय बोकारो दौरा शनिवार को संपन्न हो गया। उन्होंने अपने दौरे के दूसरे दिन शनिवार पूर्वाह्न जेएनबी पार्क में पौधरोपण किया तथा जगन्नाथ मंदिर में पूजा-अर्चना की। इसके बाद श्री सिन्हा ने बीएसएल के सीएसआर के तहत नवनिर्मित बोकारो हैंडीक्राफ्ट ट्रेनिंग सेंटर का उद्घाटन किया तथा अन्य सीएसआर गतिविधियों की जानकारी ली। बाद में बोकारो निवास में बीएसएल के वरीय अधिकारियों के साथ आयोजित एक बैठक में एनएन सिन्हा को एक प्रस्तुतीकरण के माध्यम से संयंत्र के उत्पादन, सामग्री प्रबंधन, वित्तीय प्रदर्शन, कोलियरीज, झारखण्ड में अवस्थित सेल के खदान, सेल रिफ्रेक्ट्री यूनिट का उत्पादन तथा अन्य सम्बंधित पहलुओं से अवगत कराया गया। इस अवसर पर उनके साथ बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश, अधिशासी निदेशक गण, विभिन्न विभागों के मुख्य महाप्रबंधक तथा अन्य वरीय अधिकारी भी उपस्थित थे। अपराह्न एनएन सिन्हा बोकारो से विदा हुए। इस्पात मंत्रालय के ओएसडी (विशेष कार्य पदाधिकारी) एनएन सिन्हा शुक्रवार को बोकारो पहुंचे। उनके बोकारो आगमन पर बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश, उपायुक्त बोकारो कुलदीप चौधरी सहित बीएसएल के अधिशासी निदेशकों ने उनका स्वागत किया। अपने बोकारो दौरे के क्रम में श्री सिन्हा ने सर्वप्रथम इस्पात भवन स्थित मॉडल रूम में प्लांट के ले-आउट की जानकारी ली। तदुपरान्त उन्होंने प्लांट भ्रमण कर कोक ओवेन, ब्लास्ट फर्नेस-2, एसएमएस 2- सीसीएस, हॉट स्ट्रिप मिल और सीआरएम-3 का अवलोकन किया और उत्पादन प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी ली। इस दौरान बीएसएल के निदेशक प्रभारी श्री प्रकाश तथा अन्य वरीय अधिकारी भी उपस्थित थे। प्लांट भ्रमण के उपरांत अपराह्न बोकारो निवास में श्री सिन्हा ने बीएसएल के युवा प्रबन्धकों से मुलाकात की और उन्हें संयंत्र में जारी डिजिटलाइजेशन परियोजना पर एक प्रस्तुतीकरण द्वारा अवगत कराया गया।

सरफरोशी की तमन्ना...

19 दिसंबर : पुण्यतिथि पर विशेष

स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी पुरोधा पं. रामप्रसाद बिस्मिल

मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देने वाले वीरों में पंडित रामप्रसाद बिस्मिल का एक विशिष्ट स्थान है। जीवन के समस्त सुखों को त्यागकर महानतम उद्देश्य के लिए क्रांति पथ का वरण करनेवाली ऐसी विभूतियां कम ही जन्म लेती हैं। स्वतंत्रता संग्राम क्रांतिकारियों का संदर्भ आते ही, जो वीर हमारी स्मृति में कौंध जाते हैं, उनमें रामप्रसाद बिस्मिल का नाम अग्रणी है। सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना, बाजुए कातिल में है।। सरीखे गीतों से अपने शब्दों के जरिये देशभक्ति का जज्बा भर देने वाले पंडित रामप्रसाद 'बिस्मिल' किसी परिचय के मोहताज नहीं। वे भारत के महान स्वतन्त्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि उच्च कोटि के कवि, शायर, अनुवादक, बहुभाषाविद् व साहित्यकार भी थे, जिन्होंने भारत की आजादी के लिये अपने प्राणों की आहुति दे दी।

पंडित मुरलीधर के घर में 11 जून, 1897 को उत्तर-प्रदेश के शाहजहांपुर में जन्मे पं. रामप्रसाद पिता के कठोर अनुशासन में पले-बढ़े और उन्होंने अनेकों विद्वानों और साधुजन की संगति पाई। नवीं कक्षा में ही वह आर्य समाज के सम्पर्क में आये, जिससे उनके जीवन की दशा ही बदल गई। अंग्रेज सरकार के प्रति विद्रोह की आग जो उनके सीने में एक बार बैठी, वह दिनो-दिन धधकती चली गई। इस आग ने उनके देश प्रेम से ओत-प्रोत कवि को जगाया और उत्तरोत्तर देश के अतिरिक्त शेष सब प्रसंगों से विरक्त होते चले गए। यहां तक कि उनके उद्वेग ने उनके प्राणों के प्रति मोह को भी पीछे छोड़ दिया। 19 दिसम्बर, 1927 को गोरखपुर में उन्होंने हंसते हुए फांसी का फंदा गले में यह कहते हुए डाल लिया कि अंग्रेज साम्राज्य का विनाश उनकी अंतिम इच्छा है। जिस दौर में देश में राष्ट्रीय आन्दोलन जोरों पर था। देश में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ एक ऐसी लहर उठने लगी थी जो पूरे अंग्रेजी शासन को लीलने के लिए बेताब हो चली थी।

बिस्मिलजी में भी बचपन से ही ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ एक गहरी नफरत घर कर गई। अशफाकुल्लाह खान, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव और ठाकुर रोशन सिंह जैसे क्रांतिकारियों से सम्पर्क में आने के बाद आपने अंग्रेजों की नाक में दम करना शुरू कर दिया। ब्रिटिश साम्राज्य को दहला देने वाले काकोरी कांड को अंजाम देने वाले बिस्मिल ने 'सरफरोशी की तमन्ना...' जैसा अमर गीत लिखकर आपने क्रांति की वो चिनगारी छेड़ी, जिसने ज्वाला का रूप लेकर ब्रिटिश शासन के भवन को लाक्षागृह में परिवर्तित कर दिया। यद्यपि आज क्रांतिकारियों के बलिदान को हम विस्तृत-सा कर बैठे हैं, तथापि इससे उनके त्याग का महत्त्व किसी प्रकार कम नहीं होता। स्वतंत्र भारत का प्रत्येक व्यक्ति, इस देश की मिट्टी का कण-कण सदा-सदा के लिए पंडित रामप्रसाद बिस्मिल तथा उनके साथी क्रांतिकारियों का ऋणी रहेगा।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल अलग पहाड़ों पर हैं
सूई जैसे पत्ते ऊपर हैं
वन 'कोनीफेरस' कहलाते
'चीड़', 'देवदारु', फर गाते

ऊपर ज्यों-ज्यों बढ़े पहाड़ों पर
घटता है जंगल का आकार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
देवदारु और चीड़ों के वन
साधु-पीर-फकीरों के वन
वर्षा वन या पर्णपाती वन
सबका रूप-रंग मनभावन

हर स्वर का मतलब जंगल में
'गर्जन', 'सन-सन' हो या हो 'चीत्कार'... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

91 लाख साल पहले भी था जीवन

हिमाचल में मिले छिपकली व सांप के जीवाश्म, उत्तरार्द्ध काल के मियोसीन होमिनिड इलाके की जलवायु का संकेत

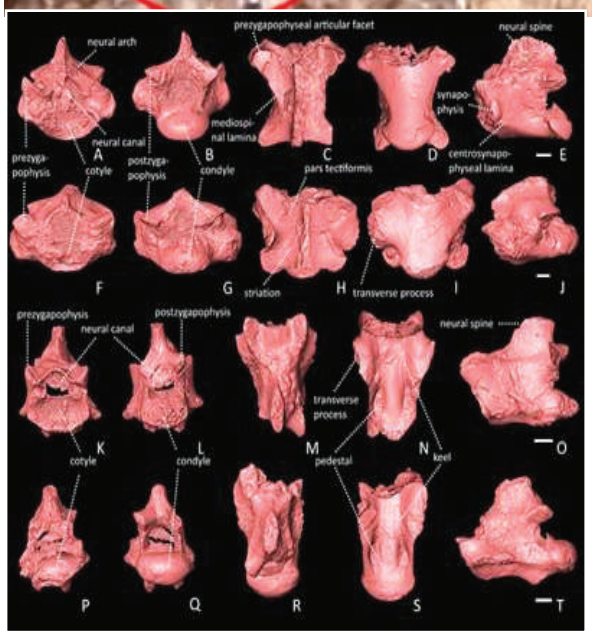

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : हाल ही में भारत के हिमाचल प्रदेश के हरितल्यांगर में उत्तरार्धकाल के मियोसीन होमिनिड इलाके में 91 लाख वर्ष पुराने छिपकलियों और सांपों के जीवाश्म अवशेषों को खोजा गया है जो इस क्षेत्र में लगभग 15-18.6 डिग्री सेल्सियस के औसत वार्षिक तापमान के साथ क्षेत्र में एक मौसमी आर्द्र उप-शुष्क जलवायु का संकेत देते हैं। अब भी इस इलाके में कुछ ऐसा ही हाल है। छिपकली और सांप ठंडे रक्त के शल्क-वाले सरीसृप (रेप्टाइल्स) अर्थात स्क्वामेट हैं जिनका क्षेत्र में वितरण, प्रचुरता और विविधता, तापमान एवं जलवायु जन्य परिस्थितियों पर अत्यधिक निर्भर है। इस कारण से, शल्क-वाले सरीसृप (रेप्टाइल्स) अर्थात स्क्वामेट को व्यापक रूप से पिछली जलवायु, विशेष रूप से परिवेश के तापमान के उत्कृष्ट संकेतक के रूप में चिन्हित किया जाता है।

पीआईबी सूत्रों के अनुसार विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी, भारत सरकार) के एक स्वायत्त संस्थान वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी (डब्ल्यूआईएचजी), देहरादून, पंजाब विश्वविद्यालय (पीयू) चंडीगढ़, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ (आईआईटी रोपड़) रूपनगर, पंजाब और ब्रातिस्लावा में कोमेनियस विश्वविद्यालय, स्लोवाकिया के शोधकताओं के सहयोग से पहली बार इस क्षेत्र से टैक्सा-- वरानस, पायथन, एक अहानिकर (कोलब्रिड) और एक नैट्रिकिड सर्प का दस्तावेजीकरण किया गया है।

हरितल्यांगर में टैक्सा वरानुस की उपस्थिति इसके पिछले जैव विविधता के संबंध में महत्वपूर्ण है क्योंकि एशिया में वैरनाइड्स का एक सीमित जीवाश्म रिकॉर्ड है। इसके अलावा, पाकिस्तान (तिथिक्रम लगभग 18 एमए) और कच्छ, गुजरात (तिथिक्रम लगभग 14-10 एमए) के शुरूआती रिकॉर्ड को छोड़कर, दक्षिण एशिया से जीवाश्म अजगर (पायथन) की उपलब्धि खराब बनी हुई है। दो प्रतिष्ठित स्क्वामेट्स- वरानस और पायथन के सह-अस्तित्व ने इस दक्षिणी एशियाई क्षेत्र में इस जीवशाखा (क्लैड) के व्यापक वितरण का पता चला है।

समग्र हरितल्यांगर में व्याप्त शल्क-वाले सरीसृप (रेप्टाइल्स) अर्थात स्क्वामेट जीव, जिसमें बड़े और छोटे अर्ध-जलीय और स्थलीय टैक्सा दोनों का वर्चस्व है, मियोसीन उत्तरार्ध, 9.1 एमए के दौरान क्षेत्र में मौसमी रूप से आर्द्र उप-आर्द्र जलवायु का संकेत मिलता है। इसके अलावा, औसत वार्षिक तापमान भी उस समय इस क्षेत्र में उच्च रहा होगा (15-18.6 डिग्री सेल्सियस से कम नहीं था। आज भी इस क्षेत्र में औसत वार्षिक तापमान के समान), वरानस और अजगर जैसे महत्वपूर्ण थर्मोफिलिक तत्वों की बहुलता से यही संकेत मिलता है। डॉ. निंगथौजम प्रेमजीत सिंह ने वाडिया इंस्टीटयूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी (डब्ल्यूआईएचजी) के डॉ. रमेश कुमार सहगल और श्री अभिषेक प्रताप सिंह, पंजाब विश्वविद्यालय (पीयू) से डॉ. राजीव पटनायक, डॉ. केवल कृष्ण और शुभम दीप, आई.आई.टी. रोपड से डॉ. नवीन कुमार, श्री पीयूष उनियाल एवं श्री सरोज कुमार और कोमेनियस विश्वविद्यालय से डॉ. आंद्रेज सेरनस्की के साथ इस अध्ययन का नेतृत्व किया। इसे नवंबर 2022 में जियोबिओस जर्नल में प्रकाशित किया गया।

सभी दंत समस्याओं का एक समाधान
डॉ. नरेन्द्र मेमोरियल डेंटल सेंटर
138 को-आपरेटिव कॉलोनी (बोकारो)
दांत एवं मुंह संबंधी सभी बीमारियों के इलाज की पूर्ण सुविधा।
समय : सुबह 9.30 से दोपहर 2.30 बजे तक
संध्या 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक
(शनिवार अवकाश)
डा. निकेत चौधरी (संध्या में)
डा. प्रशान्त कुमार, एम.डी.एस.

CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY
शिवम् हॉस्पीटल में
सेल के रिटायर्ड कर्मचारियों के लिए
मोतियाबिन्द का ऑपरेशन
एवं लेंस लगाया जाता है।

E-2, LAXMI MARKET, SECTOR-4, B.S.CITY-827004
PH: 06542-232623/233475, MOB: 7488090631

पुराने व जटिल रोगों से हैं परेशान?
होमियोपैथ से निजात पाने के लिये संपर्क करें-
प्रो. डॉ. काशीश्वर किशोर DHMS (Distinction), B.H.M.S (BU).
प्रो. भूपेन्द्र नारायण मंडल होमियोपेथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, सहरसा
पूर्व सदस्य- होमियोपैथिक मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
बैठने का स्थान : शॉपिंग सेन्टर, शॉप नं. 58, पहला तल्ला, को-ऑपरेटिव कॉलोनी, बीएस सिटी
(प्रातः 9.30- दोपहर 12.15 एवं संध्या 5.30-6.30)
जर्मन होमियो प्वाइंट, एफ/9, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बीएस सिटी
(सोमवार से शनिवारः संध्या 7.00-8.30), रविवार (संध्या 5.00-8.30)
Mob.- 9431162319 (Consultation after appointment only).